Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 29

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

22 सितम्बर 2016 ई

19 ज़िल्हज्ज 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम को जबरन नहीं फैलाया और जो तलवार उठाई गई वह इसलिए नहीं थी कि धमकी देकर इस्लाम स्वीकार कराया जाए बल्कि ये लड़ाइयां प्रतिरक्षात्मक थीं क्योंकि जब काफिरों ने हमला करके तलवार के साथ इस्लाम को नष्ट करना चाहा तो इसके अतिरिक्त क्या उपाय था कि अपनी सुरक्षा के लिए तलवार उठाई जाती।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रश्न (2): हुज़ूर ने सैंकड़ों बल्कि हज़ारों जगह लिखा है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने धर्म के लिए तलवार नहीं उठाई मगर अब्दुल हकीम को जो ख़त लिखा गया है उस में यह वाक्यांश है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने धर्म के प्रचार के लिए ज़मीन में खून की नहरें चला दीं इसका क्या मतलब है।

उत्तर: मैं अब भी कहता हूँ कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम को जबरन नहीं फैलाया और जो तलवार उठाई गई वह इसलिए नहीं थी कि धमकी देकर इस्लाम स्वीकार कराया जाए बल्कि इसमें दो बातें समक्ष थीं (1) एक तो प्रतिरक्षा के लिए ये लड़ाइयां थीं क्योंकि जब काफिरों ने हमला करके तलवार के साथ इस्लाम को नष्ट करना चाहा तो इसके अतिरिक्त क्या उपाय था कि अपनी सुरक्षा के लिए तलवार उठाई जाती। (2) दूसरा पवित्र कुरआन में इन लड़ाइयों से बहुत पहले यह भविष्यवाणी की गई थी कि जो लोग इस रसूल को नहीं मानते ख़ुदा उन पर अज़ाब नाज़िल करेगा। चाहे तो आसमान से और चाहे तो ज़मीन से और चाहे तो कुछ की तलवार का मज़ा कुछ को चखावे। इसी तरह इस विषय की और भी भविष्यवाणियां थीं जो अपने समय पर पूरी हुईं। अब समझना चाहिए कि वह ख़त जो मैंने अब्दुल हकीम खान को लिखा था मेरा यही मतलब था कि अगर रसूल का मानना अनावश्यक है तो ख़ुदा तआला ने इस रसूल के लिए यह अपनी ग़ैरत क्यों दिखलाई कि काफिरों के खून की नहरें चला दीं। यह सच है कि इस्लाम के लिए उत्पीड़न नहीं किया गया मगर चूंकि पवित्र कुरआन में यह वादा नहीं है कि जो लोग इस रसूल को झुठलाने और इनकार करने वाले हैं वे अज़ाब से मारे जाएंगे। इसलिए उनके अज़ाब के लिए यह अवसर आया कि ख़ुद इन काफिरों ने लड़ाई के लिए पहल की। तब जिन लोगों ने तलवार उठाई वे तलवार से ही मारे गए। अगर रसूल का इनकार करना ख़ुदा के निकट आसान काम था और बावजूद इनकार के मुक्ति प्राप्त हो सकती थी तो फिर अज़ाब के निकट करने की क्या ज़रूरत थी जो ऐसे रूप से नाज़िल हुआ जिसकी दुनिया में उदाहरण नहीं पाई जाती। अल्लाह तआला फरमाता है।

وَاِنۡ یَّکُ کَاذِبًا فَعَلَیۡہِ کَذِبُہٗ وَاِنۡ یَّکُ صَادِقًا یُّصِبۡکُمۡ بَعۡضُ الَّذِیۡ یَعِدُکُمۡ

अर्थात अगर यह रसूल झूठा है तो ख़ुद नष्ट हो जाएगा लेकिन अगर सच्चा है तो तुम्हारे बारे में जो अज़ाब के कुछ वादे किए गए हैं। वे पूरे होंगे। *

अब सोचने की बात है कि अगर ख़ुदा के रसूल पर ईमान लाना अनावश्यक है तो ईमान न लाने पर अज़ाब का क्यों वादा किया गया। स्पष्ट है कि उत्पीड़न से अपना धर्म मनवाना और तलवार से मुसलमान करना यह दूसरी बात है मगर इस व्यक्ति को सज़ा देना जो सच्चे रसूल की अवज्ञा करता है और मुकबाला से पेश आता है और उसे दु:ख देता है यह और बात है। सज़ा देने के लिए यह बात शर्त नहीं है कि कोई व्यक्ति मुसलमान हो जाए बल्कि इनकार के साथ मुकाबला करने वाले प्राणदण्ड के योग्य हो चुके थे और फिर ख़ुदा तआला की तरफ से उन्हें यह छूट दी गई थी कि अगर इस्लाम स्वीकार कर लें तो वे सज़ा माफ हो जाएगी और फिर एक और स्थान पर अल्लाह तआला फरमाता है

اِنَّ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا بِاٰیٰتِ اللّٰہِ لَہُمۡ عَذَابٌ شَدِیۡدٌ وَاللّٰہُ عَزِیۡزٌ ذُو انۡتِقَامٍ (सूरह आले इम्रान जो लोग ख़ुदा तआला की आयतों के इन्कार करने वाले हो गए उनके लिए कठोर यातना है और ख़ुदा ताकतवर बदला लेने वाला है। अब स्पष्ट है कि इस आयत में भी इनकार करने वालों के लिए सज़ा का वादा है। इसलिए ज़रूरी था कि उन पर अज़ाब नाज़िल होता। तब ख़ुदा ने तलवार का प्रकोप उन पर उतारा और फिर एक स्थान पर कुरआन शरीफ में फरमाता है

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِیۡنَ یُحَارِبُوۡنَ اللّٰہَ وَ رَسُوۡلَہٗ وَ یَسۡعَوۡنَ فِی الۡاَرۡضِ فَسَادًا اَنۡ یُّقَتَّلُوۡۤا اَوۡ یُصَلَّبُوۡۤا اَوۡ تُقَطَّعَ اَیۡدِیۡہِمۡ وَ اَرۡجُلُہُمۡ مِّنۡ خِلَافٍ اَوۡ یُنۡفَوۡا مِنَ الۡاَرۡضِ ؕ ذٰلِکَ لَہُمۡ خِزۡیٌ فِی الدُّنۡیَا وَ لَہُمۡ فِی الۡاٰخِرَۃِ عَذَابٌ عَظِیۡمٌ (सूरह अल्माइदा 34) अर्थात उन लोगों का इसके अतिरिक्त बदला नहीं जो ख़ुदा और रसूल से लड़ते और ज़मीन पर दंगों के लिए दौड़ते हैं ये है कि वे कत्ल किए जाएं या सूली दिए जाएँ या उनके हाथ और पांव परस्पर विरुद्ध काटे जाएं या निर्वासित करके कैद रखे जाएं। यह अपमान उनका दुनिया में है और भविष्य में बहुत बड़ा अज़ाब है तो अगर ख़ुदा तआला के निकट हमारे रसूल करीम के आदेश की अवमानना और उस का मुकाबला कुछ चीज नहीं था तो ऐसे इनकार करने वालों को जो तौहीद को मानने वाले थे (जैसे कि यहूदी) इनकार और मुकाबला की वजह से इतनी कठोर सजा अर्थात तरह तरह के अज़ाबों से मौत की सज़ा देने के लिए ख़ुदा तआला की किताब में क्यों आदेश लिखा और क्यों ऐसी सख्त सज़ाएं दी गईं क्योंकि दोनों पक्ष तौहीद को मानने वाले थे इस तरफ भी और उस तरफ भी और किसी गिरोह में कोई मुशरिक नहीं था और इसके बावजूद यहूदियों पर कुछ भी दया न आई और उनके तौहीद को मानने वाले लोगों को केवल रसूल के इनकार और मुकाबले के कारण बुरी तरह मार डाला गया यहां तक कि एक[1] बार दस हज़ार यहूदी एक दिन में कत्ल किए गए हालांकि उन्होंने केवल अपने धर्म की रक्षा के लिए इनकार और मुकाबला किया था और अपने विचार में पक्के तौहीद को मानने वाले थे और ख़ुदा को एक जानते थे।

हां यह बात ज़रूर याद रखो कि वास्तव हज़ारों यहूदी कत्ल किए गए मगर इस लिए नहीं कि ताकि वे मुसलमान हो जाएं। बल्कि केवल इस उद्देश्य से कि ख़ुदा के रसूल का मुकाबला किया। इसलिए वह ख़ुदा के निकट सज़ा पाने योग्य हो गए और पानी की तरह उनका ख़ून ज़मीन पर बहाया गया। तो ज़ाहिर है कि अगर तौहीद काफी होती तो यहूदियों का कोई अपराध नहीं था वह भी तो तौहीद को मानने वाले थे वह केवल रसूल के इनकार और मुकाबला के कारण क्यों ख़ुदा तआला के निकट दंडनीय ठहरे।

* कुछ का शब्द इसलिए अपनाया गया कि चेतावनी के भविष्यवाणियों में यह ज़रूरी नहीं है कि वे सब की सब पूरी हो जाएं बल्कि कुछ का अंजाम माफी के साथ भी हो सकता है। इसी में से।

1 यहूदी कबीला बनू क़ुरैज़ा के जो युवक एक दिन में कत्ल किए गए थे उनकी संख्या तारीख़ों में विभिन्न वर्णन की गई है कुछ ने चार सौ कुछ ने सात सौ कुछ ने आठ सौ और कुछ ने नौ सौ लिखी है और संभव है कोई रिवायत इससे अधिक भी हो इसलिए मालूम होता है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस जगह दस सौ अंकों में लिखा था जिसे कातिब ने दस हज़ार समझ लिया और इस पृष्ठ की अंतिम पंक्ति में जो हज़ारों का उल्लेख है उन से अभिप्राय वे बहु संख्यक यहूदी हैं जो विभिन्न युद्धों और विविध समयों में कत्ल हुए। अल्लाह तआला सब से बेहतर जानता है।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 159 -162)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

क्या मसीह मौऊद व महदी मा'हूद को मानना आवश्यक है ?

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद को मानना आवश्यक है।

अल्लाह तआला की ओर से जो भी मामूर और इमाम आया करते हैं उनको स्वीकार करना और ईमान लाना आवश्यक होता है क्योंकि समस्त बरकतें उनसे सम्बद्ध कर दी जाती हैं और उनके अभाव में चारों ओर अंधकार और असभ्यता होती है जैसा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि :-

"जो व्यक्ति (ख़ुदा के नियुक्त) इमाम को स्वीकार किए बिना मर गया उसकी मृत्यु जाहिलियत की मृत्यु है।"

(मुसनद अहमद बिन हंबल, जिल्द - 4, पृष्ठ - 96)

हमारे स्वामी व सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] ने इस्लाम धर्म के अन्दर अन्तिम युग में एक ऐसे मामूर के प्रकट होने की सूचना दी थी जिसे आप[स.] ने इमाम महदी तथा मसीह इब्ने मरयम के नाम से याद किया। हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] ने अपनी उम्मत को उसे स्वीकार करने के लिए बड़ी दृढ़ता के साथ नसीहत की।

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह[स.अ.व.] की आवश्यक वसीयत

"जब तुम उसे देखो तो उसकी अवश्य बैअत करना चाहे तुम्हें बर्फ पर घुटनों के बल जाना पड़े, क्योंकि वह ख़ुदा का ख़लीफ़ा महदी होगा।"

(मुस्तदरिक हाकिम भाग-4, किताबुल फ़ितन वल मलाहम, बाब - ख़ुरूजुल महदी, पृष्ठ-464)

आप[स.] ने इमाम महदी की बैअत तथा आज्ञापालन करने के बारे में शिक्षा देते हुए कहा :-

"जिस ने महदी की आज्ञा का पालन किया उसने मेरी आज्ञा का पालन किया और जिसने उसकी अवज्ञा की उसने मेरी अवज्ञा की।"

(बिहारुल अन्वार - लेखक अल्लामा बाक़िर मज्लिसी, भाग-51, पृष्ठ-73, लबनान)

पुनः कहा :- "जिसने महदी को झुठलाया उसने कुफ़्र किया।"

(हुजजुल करामा - लेखक नवाब मुहम्मद सिद्दीक़ हसन ख़ान, पृष्ठ-351, प्रेस शाहजहानी, भोपाल)

सलाम पहुंचाओ

हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] ने अपनी उम्मत को आदेश दिया कि इमाम महदी और मसीह मौऊद को मेरा सलाम पहुंचाना। हज़रत अनस[रज़ि.] से रिवायत है कि आप[स.] ने कहा :-

"तुम में से जो कोई ईसा इब्ने मरयम को पाए, उसे मेरी ओर से सलाम पहुंचाए।"

(अद्दुर्रुल मन्सूर - लेखक इमाम जलालुद्दीन सुयूती[रह.] जिल्द-2, पृष्ठ-245, प्रेस - दारुल मा'रिफ़ह बैरूत लबनान)

इस बारे में हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] की इच्छा एवं अभिलाषा असाधारण थी। हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि आप[स.] ने कहा :-

"मैं आशा रखता हूं कि यदि मेरी आयु लम्बी हुई तो मैं ईसा इब्ने मरयम से स्वयं मिलूंगा और यदि मुझे शीघ्र मृत्यु आ गई तो तुम में से जो व्यक्ति भी उसको पाए उसे मेरी ओर से सलाम पहुंचाए।"

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द-2, पृष्ठ-298)

पवित्र क़ुर्आन ने इस बात को स्पष्ट तौर पर वर्णन किया है कि बनी इस्राईल में प्रकट होने वाले मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुके हैं और पवित्र क़ुर्आन तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के प्रवचनों से यह भी ज्ञात होता है कि ईसा इब्ने मरयम के प्रकट होने से अभिप्राय ऐसे व्यक्ति का प्रकट होना है जिसने मसीह इब्ने मर्यम का मसील (समरूप) होना था और उसका प्रादुर्भाव जैसे मसीह इब्ने मर्यम का प्रादुर्भाव होगा।

ईमान अनिवार्य है

इन समस्त आदेशों से परिणाम निकालते हुए अल्लामा इस्फ़हानी कहते हैं :-

"महदी के प्रकट होने पर ईमान लाना अनिवार्य है जैसा कि यह बात धार्मिक विद्वानों के निकट मान्यता प्राप्त है तथा अहले सुन्नत वल जमाअत की आस्थाओं की पुस्तकों में लिखित है।"

(लवाइहुल अन्वारुल वह्यी जिल्द-2, पृष्ठ-80)

प्रवर्तक मदरसा देवबन्द मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी कहते हैं :-

"एक समय आएगा जब इमाम महदी अलैहिस्सलाम भी पैदा होंगे तथा उस समय जो उन का अनुसरण न करेगा वह अज्ञानता की मौत मरेगा।"

(क़ासिमुल उलूम अन्वार उलूम अनुवाद सहित, पृष्ठ - 100)

उम्मत के महापुरुषों की इच्छा

यही कारण है कि रसूल[स.] के सहाबा तथा उम्मत के महापुरुष हज़रत रसूलुल्लाह[स.अ.व.] का सलाम महदी को पहुंचाने के लिए बेचैन हैं तथा अपनी नस्लों को भी नसीहत करते रहे। हज़रत अली[रज़ि.] अपने एक शे'र में कहते हैं :-

"मेरा प्राण उस पर क़ुर्बान हो हे मेरे पुत्रो ! उसे अकेला न छोड़ देना और शीघ्र उसके साथ हो जाना।"

(हज़रत दीवान अली, जिल्द-2, पृष्ठ-97)

हज़रत अबू हुरैर: ने अपने परिजनों को नसीहत की कि यदि तुम्हारे युग में ईसा इब्ने मरयम आ जाएं तो उन्हें कहना कि अबू हुरैर:[रज़ि.] आप को सलाम करता है।"

(अद्दुर्रुलमन्सूर - लेखक इमाम जलालुद्दीन सुयूती[रह.] जिल्द-2, पृष्ठ-245, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

बारहवीं सदी के मुजद्दिद हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी कहते हैं :-

"इस भिक्षु की बड़ी इच्छा है कि यदि हज़रत रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम का युग पाए तो पहला व्यक्ति जो सलाम पहुंचावे वह मैं हूं और यदि वह युग मुझे न मिले तो मेरी सन्तान या बाद में आने वालों में से जो कोई उस मुबारक युग को पावे वह रसूलुल्लाह[स.अ.व.] का सलाम पहुंचाने की अत्यधिक इच्छा करे, क्योंकि हम मुहम्मद की सेना की अन्तिम सेना में से होंगे।"

(मजमुआ वसाया अर्बअ: पृष्ठ - 84)

इक़्तिराबुस्साअत के लेखक नूरुल हसन ख़ान साहिब हज़रत अबू हुरैर:[रज़ि.] की इस नसीहत को लिखकर अपनी सन्तान को यही वसीयत करते हुए कहते हैं :-

"तुम में से जो कोई ईसा को पावे वह उन से मेरा सलाम कहे। यह सम्बोधन है सम्पूर्ण उम्मत हो, मैं भी यह सदस्य उसी उम्मत का हूं यदि मैंने उनको पाया तो सब से पहले मैंने उनको पाया तो सबसे पहले मैं ही इन्शा अल्लाह ख़ुदा के रसूल[स.अ.व.] का सलाम पहुंचाऊंगा, वरन् मेरी सन्तान में से जो कोई उनको पावे बड़ी लालसा से उस सलाम-ए-नबुव्वत को उन तक पहुंचावे ताकि मुहम्मद की सेनाओं में से पिछली सेना में मैं ही हूं या मेरी सन्तान होवे।"

("इक़्तिराबुस्साअत" लेखक - नूरुलहसन ख़ान साहिब, पृष्ठ-154, प्रेस - मुफीदे आम आगरा - 1301 हिज्री)

तेरहवीं सदी के मुजद्दिद शहीद बालाकोट हज़रत सय्यद अहमद शहीद[रह.] के दरबारी कवि हज़रत मोमिन देहलवी ने हार्दिक इच्छा को इस प्रकार प्रकट किया है -

ज़माना महदी-ए-मौऊद का पाया अगर मोमिन
तो सब से पहले तू कहियो सलामे पाक हज़रत का

(क़ुल्लियात-ए-मोमिन, पृष्ठ-50, मकतब: शे'र व अदब समनाबाद - लाहौर 25)

दावेदार मौजूद

यह वह मुबारक युग है जिसमें ठीक चौदहवीं सदी के सर पर हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी संस्थापक जमाअत अहमदिया ने यह दावा किया कि मैं ही इमाम महदी और मसीह मौऊद हूं तथा आप के पक्ष में ख़ुदा ने बड़े-बड़े निशान दिखाए तथा पूर्वकालीन पुस्तकों में लिखित भविष्यवाणियां पूरी कीं।

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला की कृपा से पिछले सप्ताह जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का जलसा सालाना आयोजित हुआ और भी कई बातों की चिन्ता के, जिन में से सबसे अधिक चिंता दुनिया के हालात की वजह से शांतिपूर्ण रूप में जलसा के आयोजन की थी, बहुत शान्ति मय रूप में तीन दिन गुज़रे और जलसा का अंत हुआ। अल्हम्दो लिल्लाह।

जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का जलसा समय के ख़लीफा के यहां उपस्थिति के कारण एक तरह से अन्तर्राष्ट्रीय जलसा ही हो गया। दुनिया के प्रतिनिधि यहां आते हैं लेकिन इस बार इस जलसा की व्यवस्था या स्वयं सेवकों के मामले में भी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति हो गई है। कार्यकर्ता दुनिया के विभिन्न देशों से आते हैं। अमेरिका से अक्सर ख़ुद्दाम ने जलसा से पहले काम किया और कनाडा के 150 से अधिक ख़ुद्दाम ने जलसा के बाद वायंड अप में काम किया।

यू.के के लगभग छह हज़ार लड़कियां लड़के मर्द स्त्री-पुरूष बच्चे जलसा के मेहमानों की सेवा में निर्धारित थे। यह सब अल्लाह तआला की कृपा है कि उसने इतनी संख्या में कार्यकर्ता प्रदान करे।

जलसा के कार्यक्रम भी और काम करने वाले भी ऐसी खामोश तब्लीग़ कर रहे होते हैं जो इससे कई गुना अधिक होती है जो हम अन्य साहित्य वितरित करके या अन्य माध्यमों से करते हैं।

☆मुझे इस जलसा में शामिल होकर शांति और प्यार के राजदूतों से मिलने का मौका मिला है। मैं इस जलसा को वास्तविक शांति का स्थान कहूंगा। ☆ मैं जानने की कोशिश करता रहा कि व्यवस्था के पीछे क्या रहस्य है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वे एक ख़िलाफत के मानने वाले हैं और इसलिए एक ऐसी क़ौम इसलिए तैयार हो गई है, जो हर कुर्बानी के लिए तैयार रहती है। ☆ जलसा में इन युवाओं और बच्चों को देखकर जो अपनी परवाह और चिंता किए बिना दूसरों की सेवा के लिए उपस्थित और तैयार रहते हैं उन युवाओं और बच्चों द्वारा एक नई दुनिया पैदा होगी जिसमें स्वार्थ नहीं होगा बल्कि दूसरों की सेवा उच्च गंतव्य होगा और उच्च शिक्षा के साथ इस्लाम अहमदियत दूसरों के लिए आज एक स्वच्छ दर्पण की तरह है जो इस्लाम का हसीन चेहरा दुनिया को दिखाता है। ☆मैंने इस तरह की उच्च व्यवस्था कहीं और नहीं देखी। इस का कारण निस्स्वार्थ और प्यार करने वाला और मानवता का सम्मान करने वाले वह युवा और बच्चे और बूढ़े हैं जो इस जलसा में हर समय सेवा के लिए तैयार रहते हैं और जिन्हें उनके ख़लीफा का मार्गदर्शन हर समय मिलता रहता है। ☆एम.टी.ए की व्यवस्था ने भी मुझे बड़ा आश्चर्य चकित किया। इस जलसा में शामिल हर व्यक्ति अपनी भाषा में सीधा भाषणों का अनुवाद सुनकर लगता कि जलसा उस के अपने देश में हो रहा है। उसकी ज़बान और देश में हो रहा है। ☆मैंने जलसा की गहराई से समीक्षा की है और इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि केवल धन से कुछ नहीं किया जा सकता जब तक सहमति और एकता न हो। जब आप एक शरीर की तरह हो जाएं तो सब कुछ संभव हो जाता है। ☆ जलसा के कार्यकर्ता एक शरीर की तरह हो गए तो उन्होंने असंभव को संभव कर दिखाया। ☆ आज दुनिया के किसी भी देश में ऐसे युवा नगण्य हैं जो स्वेच्छा से ऐसी सेवाऐं कर रहे हैं। विशेष रूप से बच्चों का जोश से सम्मिलित होना बताता कि अहमदियत का वर्तमान और भविष्य भी उज्ज्वल है। इंशा अल्लाह तआला है। ☆जमाअत अहमदिया प्रत्येक नवागंतुक से प्यार मुहब्बत और उन्नत आतिथ्य द्वारा इस्लाम के वास्तविक और नया चेहरा दिखाती है। ☆जमाअत अहमदिया प्रत्येक नवागंतुक से प्यार मुहब्बत और उन्नत आतिथ्य द्वारा इस्लाम के वास्तविक और नया चेहरा दिखाती है। ☆ दुनिया के हर किनारे से आए इतने अधिक लोगों को बेहद शांति और प्यार से मिलजुल कर रहते देख मेरे दिल पर बहुत गहरा असर हुआ। लेकिन आज इस्लाम की शिक्षा के व्यावहारिक उदाहरण देख कर हम अब अपने प्रभाव क्षेत्र में, अपने लोगों में अपने परिवेश में कह सकते हैं कि इस्लाम की सुंदर शिक्षा जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के समीप देखो। ☆मेरे निकट इस्लाम की सुंदर छवि दिखाने के लिए यह बहुत ही उपयुक्त है। यह बात भी जलसा के माध्यम से निखर कर सामने आई है कि जमाअत अहमदिया दुनिया भर के लोगों की सेवा में हर समय संलग्न है। ☆पहले दिन मुझे लगा कि जलसा सालाना और यहां लगे हुए ध्वज बिल्कुल संयुक्त राष्ट्र का नक्शा प्रस्तुत कर रहे हैं लेकिन समय के ख़लीफा के अंतिम संबोधन को जब मैंने सुना तो मेरी राय बदल गई क्योंकि संयुक्त राष्ट्र में तो हर देश का राजदूत सम्मिलित होता है और हर एक अपने हितों की बात करता है, चाहे वह सही हो या ग़लत लेकिन समय के ख़लीफा ने सारी दुनिया के लिए न्याय की बात की है और यह बात जलसा सालाना को संयुक्त राष्ट्र से प्राथमिकता प्रदान करने वाली है।

(जलसा सालाना में सम्मिलित होने वालों में से कुछ की प्रतिक्रियाएं)

इस बार अल्लाह के फज़ल से मीडिया में भी पिछले सालों की तुलना में जलसा को बहुत अधिक कवरेज मिली है

हर अहमदी को अल्लाह तआला के शुक्रिया को अन्तिम छोर तक पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए और उसका एक ही तरीका है कि हम अल्लाह तआला के आज्ञाओं का पालन करने वाले बनें। अल्लाह तआला सब को इसकी तौफीक़ प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 19 अगस्त 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला की कृपा से पिछले सप्ताह जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का जलसा सालाना आयोजित हुआ और भी कई बातों की चिन्ता के, जिन में से सबसे अधिक चिंता दुनिया के हालात की वजह से शांतिपूर्ण रूप में जलसा के आयोजन की थी, बहुत शान्तिमय रूप में तीन दिन गुज़रे और जलसा का अंत हुआ। अल्हम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला जमाअत को आगे भी हर प्रकार की परेशानियों और कठिनाइयों से सुरक्षित रखे।

जलसे का जो रूहानी माहौल था जो अपनों और गैरों सब ने प्रकट किया, जो भावना सब ने अपने अंदर महसूस की अल्लाह तआला करे कि इसके प्रभाव हमेशा कायम रहें और हम हमेशा अल्लाह तआला के शुक्र गुज़ार बन्दे बनते हुए अल्लाह तआला के आगे इस वादे के साथ झुके रहें कि धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने

का जो वादा हमने किया है और जिन बातों ने हम पर प्रभाव क्या है उन्हें हमेशा अपने जीवन का हिस्सा बनाने की कोशिश करते रहेंगे।

हमें हमेशा यह दुआ करते रहना चाहिए कि हे अल्लाह ! तेरे फज़लों की जो बारिश हम पर हो रही है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दी गई ख़ुश्खबरियों को जिस तरह से पूरा कर रहा है वह हमारी किसी ग़लती, किसी नालायकी, किसी अयोग्यता के कारण हमारे जीवन का हिस्सा बनने से हमें वंचित न कर दे। यह दुआ करनी चाहिए कि हे अल्लाह नेकियों के करने की शक्ति भी तुझ से मिलती है और उन पर स्थापित रहने की शक्ति भी तुझ से ही मिलती है। हम अपनी कमज़ोरियों पर विजय भी तेरे फज़ल से ही पा सकते हैं। हमारे मामूली प्रयासों में भी हमेशा बरकत ही डालता रह और हमें हमेशा अपने बन्दों में शुमार रख जो तेरे साथ हमेशा चिमटे रहने वाले और तेरे आभारी रहें। अल्लाह तआला करे कि हम अल्लाह तआला के आभारी बन्दे बनते हुए अल्लाह तआला की इस घोषणा को पूरा करने वाले बनते रहें कि لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ (इब्राहीम 8) कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं निश्चित रूप तुम्हें बढ़ाऊँगा तुम्हें अधिक दूंगा।

अल्लाह तआला की कृपा से जलसे के काम जलसे से पहले शुरू हो जाते हैं और उन्हें करने के लिए ख़ुद्दाम तथा अंसार वकारे अमल के लिए अपने आप को पेश करते हैं और जलसा के दो तीन सप्ताह पहले यह काम शुरू हो जाते हैं जैसा कि पहले पिछले ख़ुत्बा में उल्लेख कर चुका हूँ और लगभग दो सप्ताह बाद तक यह सिलसिला सारे काम और सामान समेटने की वजह से जारी है और बड़ी मेहनत और ईमानदारी से लोग वकारे अमल करते हैं और फिर जलसा की डयूटियाँ भी देते हैं।

जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का जलसा समय के ख़लीफा के यहां उपस्थिति के कारण एक तरह से अन्तर्राष्ट्रीय जलसा ही हो गया। दुनिया के प्रतिनिधि यहां आते हैं लेकिन इस बार इस जलसा की व्यवस्था या स्वयं सेवकों के मामले में भी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति हो गई है। पिछले साल भी कनाडा से ख़ुद्दाम वकारे अमल के लिए आए थे लेकिन थोड़ी संख्या में और सही तरह उनसे काम नहीं लिया जा सका या समय सीमित होने की वजह से वे सही तरह से सेवा नहीं कर सके। इस साल इतना न केवल बेहतर योजना है और मेरी जानकारी के मुताबिक इस योजना के कारण बहुत अच्छा काम हुआ है बल्कि संख्या भी इससे बहुत अधिक है जो पिछले साल थी और फिर इस साल अमेरिका से भी ख़ुद्दाम वकारे अमल के लिए आए तो इस लिहाज़ से अब यह काम वकारे अमल भी अन्तर्राष्ट्रीय हैसियत पा गया है। कार्यकर्ता दुनिया के विभिन्न देशों से आते हैं। अमेरिका से अक्सर ख़ुद्दाम ने जलसा से पहले काम किया और कनाडा के 150 से अधिक ख़ुद्दाम ने जलसा के बाद वायंड अप में काम किया। यू.के के सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया ने मुझे बताया कि इन बाहर से आने वाले ख़ुद्दाम ने न केवल बड़ी मेहनत से काम किया है बल्कि बड़ी योजना और बड़े जोश से काम किया है और बड़ी जल्दी इस काम को निपटा भी दिया है। अल्लाह तआला उन सबको बदला दे। यू.के के ख़ुद्दाम एवं अत्फाल जो वकारे अमल करते रहे और डयूटियाँ करते रहे वह भी वास्तव में हमारे धन्यवाद के पात्र हैं उन्होंने भी बहुत मेहनत से काम किया और हमेशा करते हैं उनके साथ अर्थात यू.के के अत्फाल ख़ुद्दाम जो डयूटियाँ देते हैं उनके साथ प्रशासन और जलसा में शामिल होने वालों को जहां वे यू.के वालों को चाहिए जहां वे यू. के वालों का धन्यवाद करें, उन कार्यकर्ताओं का, अत्फाल और ख़ुद्दाम का धन्यवाद करें, वहाँ कनाडा और अमेरिका से आने वाले ख़ुद्दाम का भी आभारी उन्हें होना चाहिए और सब से बढ़कर तो हमें अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए कि उस ने हमें यूरोप और पश्चिमी देशों में रहने और पलने बढ़ने वाले ऐसे स्वैच्छिक सेवा करने वाले प्रदान किए जो निस्स्वार्थ होकर काम करते हैं।

यू.के के लगभग छह हज़ार लड़कियां लड़के, मर्द स्त्री-पुरूष बच्चे जलसा के मेहमानों की सेवा में निर्धारित थे। ये सब अल्लाह तआला की कृपा है कि उसने इतनी संख्या में कार्यकर्ता प्रदान करे जो शौचालय की सफाई से लेकर खाना पकाने भोजन और फिर जलसा गाह के विभिन्न काम, सुरक्षा से लेकर पार्किंग और दूसरी सुविधाएं मुहैया करने और फिर उन्हें समेटने तक चरम कौशल और योजना से काम करते रहे। यह नज़ारे हमें दुनिया में कहीं और नहीं देखेंगे। तो यह कार्यकर्ता हमारे अत्यधिक धन्यवाद के पात्र हैं और इस तरह उन कार्यकर्ताओं को भी, उन काम करने वालों को भी इन स्वयंसेवकों को भी अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए कि उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा का अवसर प्रदान किया और यह दुआ करनी चाहिए कि भविष्य में अल्लाह तआला उन्हें पहले से बढ़कर इस सेवा की तौफ़ीक़ प्रदान करे। बाहर से आए हुए मेहमानों ने इस बात पर बड़ा आश्चर्य व्यक्त किया कि कैसे उन्हें बच्चों युवाओं बुजुर्गों ने काम करते हुए प्रभावित किया है। कुछ मेहमानों की भावनाएं वर्णन कर देता हूँ।

जलसा के कार्यक्रम भी और काम करने वाले भी ऐसी खामोश तब्लीग़ कर रहे होते हैं जो इससे कई गुना अधिक होती है जो हम अन्य साहित्य वितरित करके या अन्य माध्यमों से करते हैं।

बेनिन के रक्षा मंत्री बैठक में शामिल हुए। महोदय कहते हैं मुझे इस जलसा में शामिल होकर शांति और प्यार के राजदूतों से मिलने का मौका मिला है। हर बच्चा जवान दूसरों से नैतिकता से मिलता हुआ नज़र आया। यदि किसी अन्य की भाषा समझ नहीं भी आती थी तो मुस्कुराते हुए स्वागत करता और मेहमान की ज़बान में कुछ कहने की कोशिश करता है। जलसा सालाना आपसी भाई चारा का एक बहुत बड़ा उदाहरण है। कहते हैं कि मैं इस जलसा को वास्तविक शांति का स्थान कहूंगा इस जलसा में शामिल हर बच्चा बड़ा और बूढ़ा कुरबानी करके दूसरों के आराम का ख्याल रखता है। फिर कहते हैं कि आप का जलसा मेरे लिए एक अकादमी की हैसियत रखता है जहां से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैंने इतने बड़े जलसा में किसी को धकम पेल करते नहीं देखा। सब कुछ एक प्रणाली और प्रक्रियाओं के साथ चल रहा था मेरे लिए बड़ा आश्चर्यजनक था कि ड्यूटी पर मौजूद हर छोटा बड़ा मेहमान की ज़रूरत पूरी करने में लगा हुआ था। अगर किसी बात का संकेत भी व्यक्त किया जाता और वह मौजूद नहीं होती तो उसे तुरंत ख़रीद कर जरूरत पूरी करने की कोशिश की जाती। सबसे बड़ी बात जलसा में शामिल सभी की सुरक्षा के प्रभावी और उच्च प्रबंधन का होना था। सुरक्षा की एक उच्च और उत्कृष्ट योजना थी जिस से लग रहा था कि किसी पेशेवर टीम ने इसका प्रावधान किया है हालांकि वहां मुझे न तो कोई पुलिस वाला और न ही कोई आर्मी के लोग नज़र आए। फिर कहते हैं कि जानने की कोशिश करता रहा कि व्यवस्था के पीछे क्या रहस्य है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वे एक ख़िलाफत के मानने वाले हैं और इसलिए एक ऐसी क़ौम इसलिए तैयार हो गई है, जो हर कुर्बानी के लिए तैयार रहती है। तो यह भाव गैरों के हैं।

फिर बेनिन के ही एक पत्रकार भी आए हुए थे कहते हैं कि इस जलसा की उच्च व्यवस्था के बारे में किसी को बताया तो वह तब तक विश्वास नहीं करेगा जब तक अपनी आँखों से न देख ले। आपके जलसा में शामिल होकर मुझे आशा का संदेश मिला है। दुनिया में हर तरफ निजी हितों के लिए दंगे किए जा रहे हैं, लेकिन आप के जलसा में इन युवाओं और बच्चों को देखकर जो अपनी परवाह और चिंता किए बिना दूसरों की सेवा के लिए उपस्थित और तैयार रहते हैं उन युवाओं और बच्चों द्वारा एक नई दुनिया पैदा होगी जिसमें स्वार्थ नहीं होगा बल्कि दूसरों की सेवा उच्च गंतव्य होगा और उच्च शिक्षा के साथ इस्लाम अहमदियत दूसरों के लिए आज एक स्वच्छ दर्पण की तरह है जो इस्लाम का हसीन चेहरा दुनिया को दिखाता है। कहते हैं पत्रकार की हैसियत से दुनिया के अक्सर भागों में गया हूँ। मैंने सऊदी अरब में हज व्यवस्था देखी। ईरान में भी बहुत बड़े समारोहों में भाग लिया। मैंने यू.एन ओ के अधीन भी बड़े जलसों में भाग लिया लेकिन मैंने इस तरह की उच्च व्यवस्था कहीं और नहीं देखी। इस का कारण निस्स्वार्थ और प्यार करने वाला और मानवता का सम्मान करने वाले वह युवा और बच्चे और बूढ़े हैं जो इस जलसा में हर समय सेवा के लिए तैयार रहते हैं और जिन्हें उनके ख़लीफा का मार्गदर्शन हर समय मिलता रहता है। कहते हैं कि मैं अपने दिल की भावना ठीक अपने शब्दों में वर्णन करने में असमर्थ हूँ। कहते हैं यह मेरे लिए बड़ा आश्चर्यजनक अनुभव है कि जीवन के हर वर्ग से संबंधित लोग हंसते और मुस्कुराते चेहरे के साथ मेहमानों की सेवा करते देखे। यह बात जानने में असफल रहा कि उन में से कौन अमीर है और कौन ग़रीब एक ही तरह एक ही जुनून से वे दूसरों के आराम के लिए दिन और रात मेहनत करते नज़र आए। कहते हैं कि एम.टी.ए की व्यवस्था ने भी मुझे बड़ा आश्चर्य चकित किया। मैं बेनिन में नेशनल टीवी का निदेशक रहा हूँ मैंने आज तक टीवी के लाइव कार्यक्रम के इतनी उच्च व्यवस्था कहीं और नहीं देखी। यू.एन.ओ में भी इतनी भाषाओं में सीधा अनुवाद नहीं होता जितने आपके यहां एम.टी.ऐ द्वारा सीधा भाषणों का अनुवाद का इंतज़ाम था। इस जलसा में शामिल हर व्यक्ति अपनी भाषा में सीधा भाषणों का अनुवाद सुनकर लगता कि जलसा उस के अपने देश में हो रहा है। उसकी ज़बान और देश में हो रहा है। मैंने अहमदियत में यह बात सीखी है कि ईमान को सभी बाकी चीज़ों से बेहतर रखो और सत्य ही जीत होती है शक्तिशाली हमेशा शक्तिशाली नहीं है। कहते हैं कि जलसा में शामिल होकर मैं तो कहूंगा कि ख़ुदा से मिलाने वाला रास्ता आज भी मौजूद है यदि कोई उस पर पालन करना चाहे तो।

कांगो किंशासा के एक प्रांत के वकील जर्नल शामिल थे। वह कहते हैं मैं पच्चीस साल से मजिस्ट्रेट के रूप में काम कर रहा हूँ। मैंने जलसा की गहराई से समीक्षा की है और इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि केवल धन से कुछ नहीं किया जा सकता जब तक सहमति और एकता न हो। जब आप एक शरीर की तरह हो जाएं तो सब कुछ संभव हो जाता है। जलसा के कार्यकर्ता एक शरीर की तरह हो गए तो उन्होंने असंभव को संभव कर दिखाया। जंगल को रहने लायक बना दिया। जहां सब कुछ उपलब्ध था। साफ-सुथरे टायलटस, आवास स्थल, रेडियो और टीवी केंद्र जो विभिन्न भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित कर रहे थे। विभिन्न देशों से आए हुए अमीर ग़रीब बड़े पदों वाले राजनेता, ज्ञान तथा बौद्धिक व्यक्ति सब एक होकर काम कर रहे थे। लगभग चालीस हज़ार मेहमानों के खाने पीने, लाने ले जाने और अन्य ज़रूरतों का ख्याल रखना कोई आसान काम नहीं था लेकिन यह काम छह हज़ार के करीब स्वयं सेवी बिना किसी शोर हंगामे और फसाद के आनन्द से कर रहे थे। इन स्वयं सेवकों में तीन साल से लेकर अस्सी साल की उम्र के लोग शामिल थे अर्थात बच्चे भी और बूढ़े भी ये स्वयं सेवक दूसरों की सेवा कर के ख़ुशी महसूस कर रहे थे मैंने तो हर तरफ प्यार और भाईचारा ही देखा। कहते हैं मैं समझता हूँ कि जमाअत अहमदिया बहुत प्रभावी रंग में काम कर रही है और यह कभी असफल नहीं हो सकती। इंशा अल्लाह। कहते हैं मैं तो सबको कहना चाहता हूं कि जमाअत को क़रीब से देखो तो आप को अपने आप समझ आ जाएगा। कहते हैं कि जब जलसा में आया तो केवल पहला आधा घंटा अजनबी महसूस किया इस के बाद लोग अपने आप मुझ से आकर मिलते रहे। ऐसे लग रहा था जैसे हम सब एक दूसरे को वर्षों से जानते हैं।

यह भी जलसा का एक सौंदर्य है कि केवल जलसा के काम करने वाले ही ग़ैरों को प्रभावित नहीं करते बल्कि जलसा में शामिल होने वालों को भी प्रभावित कर रहे हैं और इस माध्यम से एक शांत तब्लीग़ हो रही है। इसलिए इस दृष्टि से जहां ड्यूटी देने वाले अल्लाह तआला का आभारी बनें कि वे अपने व्यवहार से इस्लाम का संदेश पहुंचा रहे हैं और ग़ैर मुसलमानों को प्रभावित कर रहे हैं और अल्लाह तआला के फज़्लों का वारिस बन रहे हैं, इस मामले में वहाँ शामिल होने वाले अहमदी भी अल्लाह तआला का धन्यवाद करें कि अल्लाह तआला उनके द्वारा खामोश तब्लीग़ करवा रहा है।

नाइजर से, राष्ट्रपति के धार्मिक मामलों के विशेष सलाहकार भी इस वर्ष जलसा में शामिल हुए थे। वे कहते हैं कि लगभग सारा वर्ष सफर में रहता हूँ और धार्मिक बैठकों में शामिल होता हूं। लेकिन मैंने आज तक कभी ऐसा आध्यात्मिक दृश्य नहीं देखा। बैठक में शामिल होने से मुझे लग रहा था कि आसमान से नूर नाज़िल हो रहा है। बैअत का नज़ारा देखने के बाद कहते हैं मानो में बैअत रिज़वान में शामिल हों।

जापान से एक दोस्त आयूमा (Aoyama) यूसुफ साहिब जो कि प्रसिद्ध विद्वान और जापान एलगलीकन (Anglican) के अध्यक्ष हैं शामिल हुए कहते हैं कि अहमदी युवाओं और बच्चों की सेवा भावना सराहनीय है। आज दुनिया के किसी भी देश में ऐसे युवा नगण्य हैं जो स्वेच्छा से ऐसी सेवाऐं कर रहे हैं। यह नज़ारा केवल जलसा सालाना में नज़र आ रहा है कहीं युवा भाग भाग कर खिलाने के लिए चिंतित हैं कहीं कोई मेहमान को लाने ले जाने के लिए वाहनों की चिंता में है कहीं बच्चे पानी पिला रहे हैं तो कहीं बड़ी आयु के लोग विभिन्न कार्यों में व्यस्त हैं। विशेष रूप से बच्चों का जोश से सम्मिलित होना बताता कि अहमदियत का वर्तमान और भविष्य भी उज्ज्वल है। इंशा अल्लाह तआला है।

फिर युगांडा के वाइस परीज़ीडिंट एडवरट सैकांदी (Edward Ssekandi) आए हुए थे। कहते हैं कि जब उन्हें जलसा गाह का टूर करवाया गया और बताया गया कि सभी कार्यकर्ता स्वयं सेवक हैं तो बहुत हैरान हुआ। फिर सुरक्षा वालों को देख कर पूछने लगे कि बाकी तो स्वयं सेवी हैं ठीक है लेकिन उन्हें वास्तव में पैसे दिए जाते होंगे तो महोदय को जब यह बताया गया कि यहाँ काम करने वाले सभी स्वेच्छा से काम कर रहे हैं बड़े प्रभावित हुए। कहने लगे मैंने अपने जीवन में कभी भी मुसलमानों का इतना बड़ा जलसा नहीं देखा जहां सभी लोग शांति के साथ एक साथ रह रहे हों और मैंने मुसलमानों के बारे में यही सुन रखा था कि लोगों के गले काटते हैं और दूसरों को तकलीफ देते हैं। युगांडा में भी मुसलमान आपस में लड़ते रहते हैं और सरकार को कभी-कभी Intervene करना पड़ता है लेकिन अब मुझे पता चला कि मूल और वास्तविक मुसलमान कौन हैं और इस्लाम की शिक्षा शांति और सुरक्षा की शिक्षा है।

रशिया से एक मेहमान महिला डॉक्टर एरीना सरीनकवो (Dr Irina Sirinko) आई हुई थीं। महोदया रूस में इंस्टीचियूट ओरेयनटल स्टडीज़ में प्रोफेसर हैं। कहती हैं कि जमाअत के इस जलसे में सम्मिलित होना मेरे जीवन का पहला अनुभव था जो एक अविस्मरणीय अनुभव साबित हुआ। इसका कराण सिर्फ यह नहीं कि जलसा का प्रबंधन और योजना बहुत उच्च गुणवत्ता की थी बल्कि बहुत बड़ी वजह यह है कि जलसा का माहौल बहुत आध्यात्मिक था। जमाअत अहमदिया प्रत्येक नवागंतुक से प्यार मुहब्बत और उन्नत आतिथ्य द्वारा इस्लाम के वास्तविक और नया चेहरा दिखाती है।

आइस लैंड से एक मेहमान आए हुए थे। कहते हैं कि इस जलसा में शामिल होना मेरे जीवन के बहुत सुंदर सबसे अनुभवों में से था। चालीस हज़ार लोगों को एक जगह इकट्ठा देखकर मेरा ईमान पुन: जीवित हो गया। दुनिया के हर किनारे से आए इतने अधिक लोगों को बेहद शांति और प्यार से मिलजुल कर रहते देख मेरे दिल पर बहुत गहरा असर हुआ। मैं आप के आतिथ्य का अत्यंत आभारी हूँ और मैं कोशिश करूँगा कि इस्लाम के वास्तविक शांति और प्यार के संदेश को फैलाऊं।

तो यह जो हमारा माहौल होता है उसे देख कर लोग बड़े प्रभावित होते हैं।

शामिल होने वालों से कुछ ऐसी घटनाएं हो जाती हैं जो कई बार बुरा असर डाल सकते हैं। यह तो अल्लाह तआला का शुक्र है और छिपाना है कि इन लोगों के सामने ऐसी घटनाएं नहीं होती। अब इस साल भी कुछ ऐसी घटनाएं थी जो नहीं होने चाहिए थी। कुछ लोगों ने आपस में लड़ाई भी की और ऐसे लोगों को ध्यान रखना चाहिए कि यह न केवल जमाअत की बदनामी का कारण बन रहे हैं बल्कि बाहर से आने वालों को एक ऐसा संदेश दे रहे हैं जो इस्लाम से भी दूर कर रहा है और फिर जमाअत अहमदिया को भी उन लोगों में शुमार कर देते हैं जिनके बारे में अच्छा प्रभाव लोग नहीं रखते। प्रत्येक अहमदी को जलसा के दिनों में तो विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

ग्रीस के प्रतिनिधिमंडल से एक साहिब कहते हैं कि जलसा की व्यवस्था बहुत उच्च थी और बहुत व्यवस्थित तरीके से स्वयं सेवकों ने सारा काम किया। मेरी जब विभिन्न देशों से आए हुए लोगों से मुलाकात हुई तो मैंने सूची बनानी शुरू कर दी कि देखूं कितने देशों से यहां लोग आए हैं। मैं हैरान हुआ कि मेरी सूची की संख्या तीस देशों पर पहुंच गई। कहते हैं जलसा के तीसरे दिन जब मार्की में बैअत का समारोह देखा तो यह मेरे लिए बहुत आध्यात्मिक अनुभव था। मैंने बहुत सारे लोगों के चेहरों को भावनाओं से भरपूर पाया। वास्तव में यह एक बहुत सुंदर नज़ारा था।

फिर मैसेडोनिया से भी एक साहिबा आई हुई थीं। उनका एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल था। उन की प्रतिक्रिया वर्णन कर रहा हूँ। कहती हैं जलसा सालाना की व्यवस्था ने मुझे बहुत हैरान किया। प्रत्येक मेहमान के लिए ज़रूरत की हर चीज़ मौजूद थी। मैं सब से अधिक छोटे बच्चों से प्रभावित हुई जो मेहमानों की सेवा कर रहे थे।

ग्वाटेमाला के एक पार्लियामेंट के सदस्य ऑफ ख़यूसीलीज़ साहिब कहते हैं कि मेहमानों की सेवा रश्क योग्य थी। इस तरह बच्चों की डयूटियाँ लगा कर वस्तुत: भविष्य के लिए उन्हें तैयार करना ताकि अपनी ज़िम्मेदारियों को इस रंग में निभा सकें प्रासंगिक है।

अत: जहां सामान्य रूप से जलसा हर शामिल होने वाले अहमदी के लिए ईमान और व्यावहारिक सुधार का माध्यम बनता है जलसा में हर एक अपना अपना सुधार करता है, प्राय की व्यावहारिक सुधार की ओर भी ध्यान होता है वहाँ जलसा दूसरों को भी प्रभावित करता है और केवल प्रशिक्षण की सीमा तक ही नहीं बल्कि अब तो इसका विस्तार इतना हो गया है कि जलसा सालाना अहमदियत और सच्चे इस्लाम की तब्लीग़ के नए नए रास्ते खोल रहा है।

मूल उद्देश्य, बहुत बड़ा उद्देश्य तो जमाअत के लोगों की तरबियत है लेकिन दूसरों के यहाँ आने से तब्लीग़ के बड़े नए रास्ते खुल रहे हैं। मेहमान इस बात को व्यक्त करते हैं कि इस्लाम की सुंदर शिक्षा का हमें पता नहीं था और मीडिया और कुछ मुस्लिम समूहों या गिरोह ग़लत रंग में इस्लाम को पेश करते हैं और वही हमारे मन पर हावी है यह अक्सर ने व्यक्त किया। मुसलमान का नाम सुनते ही आतंकवाद और चरम पंथ, उग्रवाद और चरम पंथी और अत्याचारी की तस्वीर उभर कर हमारे सामने आती है लेकिन आज इस्लाम की शिक्षा के व्यावहारिक उदाहरण देख कर हम अब अपने प्रभाव क्षेत्र में, अपने लोगों में अपने परिवेश में कह सकते हैं कि इस्लाम की सुंदर शिक्षा जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के समीप देखो।

इस बारे में कुछ और प्रतिक्रियाएं भी वर्णन करता हूं। ग्वाटेमाला के एक पार्लियामेंट के एक सदस्य आलियाना (Aliana) साहिबा कहती हैं कि मुस्लिम

जमाअत अहमदिया के जलसा सालाना में पहली बार शामिल होना मेरे लिए एक सुन्दर अनुभव था और इस्लाम के बारे में वास्तविक शिक्षाओं से परिचय हुआ। जमाअत की प्रणाली से प्रभावित हुई इसी तरह अच्छी मेहमान नवाज़ी और प्यार और मुहब्बत का माहौल रश्क योग्य है केवल अलग विचार और विभिन्न देशों के बीच असाधारण प्यार और भाईचारा का उदाहरण सम्मान योग्य और अनुकरणीय है। इस जलसा में शामिल होना मेरी जीवन की बेहतरीन यादें हैं इस पर हार्दिक ख़ुशी और प्रसन्नता महसूस करती हूँ। कहती हैं यहां का न भूलने वाली सुन्दर यादें लेकर अपने देश ग्वाटेमाला लौट रही हूँ इस आशा के साथ कि भविष्य में भी इस मुबारक जलसा में सम्मिलित होने का सौभाग्य नसीब हो।

एक जमाअत से ग़ैर दोस्त ज़कारिया सादी साहिब पी.एच.डी के छात्र हैं। कहते हैं मैं समझता हूं कि सालाना जलसा एक बहुत सुंदर समारोह था। मेरे निकट इस्लाम की सुंदर छवि दिखाने के लिए यह बहुत ही उपयुक्त है। तथा यह बात भी जलसा के माध्यम से निखर कर सामने आई है की जमाअत अहमदिया दुनिया भर के लोगों की सेवा में हर समय संलग्न है। अफ्रीकी देशों में ग़रीबों के लिए मेडिकल केयर(Medical Care) पंहुचाने, पीने का पानी मुहैया करना और दूसरी सुविधाएं मुहैया करना।

फिर एक जमाअत से ग़ैर दोस्त टोनी वायटिंग (Tony Whiting) हैं कहते हैं कि जमाअत को देख कर इस बात का शिद्दत से अनुभव होता है कि ब्रिटेन के लोग आप की जमाअत से बहुत कुछ सीख सकते हैं जैसे समुदाय क्या है और किस तरह एक साथ होकर शांति की स्थापना के लिए प्रयास किया जाता है और कैसे युवा पीढ़ी को शांति की स्थापना के लिए हरकत में ला कर विश्व के कल्याण के लिए एक समाज का मूल्यवान और सक्रिय सदस्य, बनाया जा सकता है। आप के समुदाय को देखकर कभी आश्चर्य नहीं होता कि क्यों दुनिया भर से लोग आप की जमाअत में शामिल हो गए हैं।

नए अहमदियों की भी प्रतिक्रियाएं हैं और यह उनके प्रशिक्षण के माध्यम बनते हैं। ग्वाटेमाला के एक नए अहमदी लूइस अल्फ़रीदो (Luis Alfredo) साहिब कहते हैं कि मेरे लिए एक ऐसी जमाअत जो वास्तविक इस्लामी शिक्षाओं को व्यवहार में दुनिया में पेश कर रही है का सदस्य होना एक महान बात है जिस का एक उदाहरण जमाअत अहमदिया का जलसा सालाना है जिस में विभिन्न देशों और रंग व नस्ल के लोग आपसी प्रेम व भाईचारा का व्यावहारिक उदाहरण बने होते हैं और अपने माटो "प्यार सबके लिए नफरत किसी से नहीं" की व्यावहारिक फोटो जलसा सालाना में देखने में आती है।

फिर बेल्जियम की एक महिला हैं फातू माता दयालु साहिबा(Fatoumata Diallo) अपने दो बच्चों के साथ जलसा में शामिल हुईं और बच्चों के साथ ही उन्होंने बैअत कर ली। कहती हैं मुझे मेरे पति ने जमाअत से परिचित किया था मगर मैं जमाअत के बारे में एक दुविधा का शिकार थी कोई कहता था कि जमाअत अहमदिया दूसरे समुदायों की तरह एक संप्रदाय है कोई कहता था यह लोग मुसलमान नहीं हैं इसलिए मैंने फैसला किया कि मैं जलसा में शामिल होकर सच्चाई मालूम करूं। जलसा में शामिल होने के बाद मुझे पता चला कि जमाअत अहमदिया के लोग बहुत अच्छे सभ्य और सब से ऊपर के सच्चे मुसलमान हैं और फिर मेरी तकरीरों का ज़िक्र करते हुए कहती हैं कि उन में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों का ज़िक्र रहा। शांति तथा सत्य, सच्चाई और विवेक की हिदायत थी। कहती हैं ख़ुदा का शुक्र है कि उसने हमें वह राह दिखलाई जो उसकी हस्ती की ओर ले जाने वाली है। फिर शुक्रिया भी करती हैं कि बहुत सारे वालन्टीयरज़ ने, कार्यकर्ताओं ने दिन रात थकान के बावजूद हमारे आराम का ख्याल रखा और हमें बहुत सम्मान दिया।

जापान के प्रोफेसर साहिब जिन का मैंने पहले उल्लेख किया है वह कहते हैं कि जलसा में अस्सी देशों के तीस हज़ार से अधिक लोग भाग ले रहे हैं। पहले दिन मुझे लगा कि जलसा सालाना और यहां लगे हुए ध्वज बिल्कुल संयुक्त राष्ट्र का नक्शा प्रस्तुत कर रहे हैं लेकिन समय के ख़लीफा के अंतिम संबोधन को जब मैंने सुना तो मेरी राय बदल गई क्योंकि संयुक्त राष्ट्र में तो हर देश का राजदूत सम्मिलित होता है और हर एक अपने हितों की बात करता है, चाहे वह सही हो या ग़लत लेकिन समय के ख़लीफा ने सारी दुनिया के लिए न्याय की बात की है और यह बात जलसा सालाना को संयुक्त राष्ट्र से प्राथमिकता प्रदान करने वाली है।

इस बार अल्लाह तआला की कृपा से जलसा की मीडिया में भी पिछले सालों की तुलना में बहुत अधिक कवरेज हुई है। केंद्रीय प्रेस और मीडिया का जो हमारा कार्यालय है उस की यह रिपोर्ट है कि यह कवरेज जलसा से पहले शुरू हो गई थी और बी.बी.सी, रेडियो फ़ोर इकोनोमिक्स, दी इकोनोमिक्स, दी गार्डेयन, दी इंजीपेनडेंट, चैनल फोर, डेली टेलीग्राफ, दैनिक एक्सप्रेस, डेली मेल। यह दुनिया की सबसे अधिक ऑन लाइन पढ़ी जाने वाली अखबार है डेली मेल द सन। यह यू.के में सब से अधिक पढ़ी जाने वाली अख़बार है। रेडियो एल बी एसी, लंदन लाइव टीवी, स्काई न्यूज, चैनल फाइव, स्कॉटिश, टीवी बेल, फास्ट टेलीग्राफ और नॉटिंघम पोस्ट आदि इन सब में जलसा की कवरेज हुई। इसके अतिरिक्त बी.बी.सी के विभिन्न क्षेत्रीय स्टेशनों पर समाचार प्रसारित हुए। इस तरह उनका मानना है कि प्रिंट और ऑन लाइन मीडिया के पाठकों की संख्या 41 लाख है और रेडियो सुनने वालों की संख्या 2.48 लाख है लगभग अढ़ाई लाख। टेलीविजन पर देखने वालों की संख्या एक लाख है सोशल मीडिया के द्वारा 91 लाख लोगों तक खबर पहुंची। इस तरह अगर सब को मिलाया जाए कि कुल 135 लाख बनती है लेकिन यह उन्होंने सतर्क होकर रिपोर्ट देते हुए लिखा है कि अगर हम यह कल्पना करें कि सारे अख़बार नहीं पढ़ते और हर खबर नहीं पढ़ते लोग और अगर इस केवल टोटल का बीस प्रतिशत लोग देखें तो तब भी अठारह लाख से ऊपर लोगों तक यह संदेश पहुंचा है। जलसा की ख़बर और जमाअत अहमदिया का शांति और प्यार और मुहब्बत का संदेश।

पिछले साल की तुलना में यह जो सिद्धांत इस्तेमाल किया फार्मूला तो पिछले साल तो इससे बहुत कम था लेकिन अगर हम केवल बीस प्रतिशत नहीं गिनते तो तब भी पिछले साल छह लाख से अधिक लोगों तक यह संदेश पहुंचा है लेकिन वैसे तो मेरा विचार है अत:100 लाख से ऊपर पहुंचा है पिछले साल इस लिहाज से गणना नहीं की गई थी। इस कवरेज पर हमारा प्रेस और मीडिया विभाग ख़ुद भी हैरान है। यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा है जो इस ओर ध्यान हुआ।

विभाग तब्लीग़ यू.के की मीडिया टीम के अनुसार दक्षिण पश्चिम लंडनर (Southwest Londoner) अख़बार है उसमें तीन लेख प्रकाशित हुए और इसे ऑन लाइन पढ़ने वाले डेढ़ लाख के लगभग लोग हैं। स्कॉटलैंड में हेराल्ड पत्रिका में जलसा के संबंध में लेख प्रकाशित हुआ उसके पाठकों की संख्या भी पौने दो लाख के क़रीब बताई जाती है। इसके अतिरिक्त बेल्जियम के दो राष्ट्रीय समाचार पत्रों ने जलसा के संबंध में लेख प्रकाशित किए। गुयाना से भी एक महिला पत्रकार कैमरामैन के साथ जलसा में शामिल हुईं। वहाँ टीवी जी(TVG) पर गुरुवार से लेकर रविवार तक रोज़ाना शाम को जलसा सालाना के हवाले से ख़बर दी गईं। इसके अतिरिक्त गुयाना के प्रसिद्ध अख़बार गुयाना टाइम्स में भी लेख छपे। अनुमान के अनुसार इस टीवी चैनल को देखने वालों की संख्या दो लाख से अधिक है जबकि अख़बार गुयाना टाइम्स के पाठकों की संख्या तीन लाख से अधिक है।

इन अख़बारों में छपने वाले लेख के बारे में सकारात्मक और नकारात्मक हर दो तरह की प्रतिक्रिया देखने को मिलीं। लोगों ने लेख के नीचे अपने विचार लिखे हैं। कुछ प्रतिक्रियाएं हैं कि जमाअत अहमदिया का फिर्का बाकी सभी इस्लामी समुदायों से अलग है और सही अर्थों में शांति प्रिय लोग हैं जबकि दूसरे मुसलमान उनसे नफरत करते हैं।

फिर एक साहिब ने लिखा जमाअत अहमदिया एक शांतिपूर्ण जमाअत है लेकिन दुनिया भर में सुन्नी मुसलमान उन पर अत्याचार करते हैं और उन्हें काफिर कहते हैं। फिर कहते हैं कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के लोग हिंदुओं के ख़ुदा कृष्णा को एक पैग़म्बर मानते हैं। यह बहुत शांतिपूर्ण लोग हैं उनकी विचारधारा अन्य मुसलमानों से अलग हैं इसलिए दुनिया भर में उन पर अत्याचार किए जा रहे हैं।

फिर कुछ ने अख़बारों को यह भी लिखा कि जमाअत अहमदिया से संबंधित खबर पढ़कर अच्छा लगा। हम उम्मीद करते हैं कि जमाअत अहमदिया उन लोगों पर भी प्रभावित हो जो इस्लाम को चरम पंथी समझते हैं।

फिर एक ने लिखा कि लोग कहते हैं कि मुसलमान आतंकवाद के ख़िलाफ कब आवाज उठाएंगे। फिर लिखने वाला लिखता है कि अख़बार में पढ़ा कि अहमदी मुसलमान बड़े बड़े पैमाने पर आतंकवाद के ख़िलाफ आवाज़ उठा रहे हैं। अहमदी तो एक लंबे समय से आतंकवाद की निंदा कर रहे हैं लेकिन लोग उन बातों की ओर ध्यान नहीं देते और मीडिया की दूसरी ख़बरों को आधार बनाकर मुसलमानों को जज करते हैं।

फ्रांस में जो ख़बर छपी उस पर एक ने लिखा कि मुझे आशा है कि फ्रांस में भी इस प्रकार का एक जलसा आयोजित होता ताकि वहाँ चरम पंथी दूसरों पर अपनी राय ठूंसना बन्द करें।

लोगों की कुछ प्रतिक्रियाएं ऐसी हैं कि बड़ी देर से इसकी ज़रूरत महसूस हो रही थी लेकिन यह काम अभी हुआ हालांकि जमाअत अहमदिया तो सौ साल से अधिक समय से यह काम कर रही है। यह प्रेस और मीडिया हमें कवरेज नहीं देती क्योंकि इस में उनकी रुचि के सामान नहीं होते। अब क्योंकि प्रेस ने कवरेज दी तो लोग समझ रहे हैं शायद यह पहली बार काम किया।

एम.टी.ए अफ्रीका और अन्य चैनलों के द्वारा अफ्रीका में कवरेज हुई। जलसा सालाना यू.के का प्रसारण पहली बार एम.टी.ऐ अफ्रीका इंटरनेशनल के माध्यम से दिखाया गया। पूर्वी और पश्चिमी अफ्रीका से सैकड़ों की संख्या में मित्रों ने बधाई और संदेश भेजे।

एम.टी.ए अफ्रीका के अतिरिक्त निम्नलिखित टीवी चैनलों ने भी जलसा के प्रसारण दिखाए। घाना नेशनल टेलीविज़न, साइन प्लस, टीवी घाना, टीवी अफ्रीका, सिएरा लियोन नेशनल टी.वी, एम आई टीवी नाइजीरिया, बेनिन में भी एक निजी चैनल ई टेल पर मेरा संबोधन पूरा प्रसारित किया गया। कांगो ब्राज़ावील सीमित क्षेत्र में भी जलसा के कार्यक्रम टीवी और रेडियो पर प्रसारित हुए। युगांडा के प्रसारण निगम ने पहले तो जलसा सालाना प्रसारण दिखाने से माफी मांग ली थी मगर फिर अंतिम समय उन्होंने जलसा की कवरेज की अनुमति दी। इस तरह युगांडा के अतिरिक्त रवांडा में भी जलसा का प्रसारण देखा गया।

मीडिया कवरेज के कारण और जलसा के कारण से कुछ बैअतें भी हुईं। कांगो ब्राज़ावील में एक ईसाई दोस्त मिस्टर वैली को मिशन हाउस में जलसा सालाना यू.के दिखाने की दावत दी गई। उन्होंने ने तीनों दिन जलसा सुना और जलसा के बाद कहने लगे मुझे पहले मुसलमानों से बहुत डर लगता था लेकिन यहां आकर मैंने देखा कि हर तरफ प्यार और मुहब्बत की बातें हो रही थीं विशेष रूप से समय के ख़लीफा के भाषणों ने मुझे झकझोर कर रख दिया। अब मुझे जमाअत के पक्ष में कोई तर्क नहीं चाहिए बैअत कर के जमाअत अहमदिया में प्रवेश करता हूँ।

फिर एक स्थानीय जमाअत के सदर की पत्नी ईसाई थीं। उन्हें बहुत तब्लीग़ की गई लेकिन वह बैअत की तरफ नहीं आती थीं। इस बार उन्होंने जलसा की कार्यवाही देखी और जब मेरा संबोधन सुना तो उसके बाद कहने लगीं कि इस भाषण ने मुझे मजबूर कर दिया है कि में जमाअत में प्रवेश कर जाऊं क्योंकि यहां सत्य ही सत्य है और जीवन जीने के तौर-तरीके सिखाए जाते हैं।

तो यह कुछ नमूने मैंने दिखाए हैं अनगिनत नमूने मेरे पास आए थे और आते जाऐंगे। अल्लाह तआला के फज़लों का दायरा फैलता चला जा रहा है और इस दृष्टि से हमारा अल्लाह तआला का धन्यवाद का दायरा भी फैलता चला जाना चाहिए ताकि "लअज़ी दन्नकुम" के वारिस हम बनते चले जाएं। अल्लाह तआला हमारे इनआमों को और अधिक विस्तृत करता चला जाए।

अत: जलसा में शामिल होने वाला हर अहमदी बल्कि हर अहमदी जो यहाँ शामिल नहीं दुनिया में देख रहे थे, हर अहमदी को अल्लाह तआला के शुक्रिया को अन्तिम छोर तक पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए और उसका एक ही तरीका है कि हम अल्लाह तआला के आज्ञाओं का पालन करने वाले बनें। अल्लाह तआला सब को इसकी तौफीक़ प्रदान करे।

इसी प्रकार प्रशासन से भी मैं कहूंगा। समय अधिक हो गया इसलिए प्रशासन के बारे में अधिक बातें नहीं कीं। कुछ कमियां हुई हैं कुछ जगह से मुझे सूचना मिली है। स्कैनिंग क्षेत्र में और जगहों पर पार्किंग स्थानों और इसी तरह सुरक्षा में भी कुछ कमियां दिखी हैं इसलिए बेहतर योजना की ज़रूरत है जिसके लिए अब प्रशासन को काम शुरू कर देना चाहिए और क्या योजना करनी है और कैसे इन कमियों को दूर करना है, क्या बेहतर से बेहतर व्यवस्था करनी हैं इसके बारे में सोचें और फिर मुझे उसकी रिपोर्ट भी दें। अल्लाह तआला उन्हें भी तौफ़ीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

नौनिहालाने जमाअत! मुझे कुछ कहना है!

(हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो)

नौनिहालाने जमाअत! मुझे कुछ कहना है!
पर है यह शर्त कि ज़ाए मेरा पैग़ाम न हो
चाहता हूँ कि करूँ चन्द नसाएह तुम को!
ताकि फिर बाद में मुझ पर कोई इल्ज़ाम न हो

जब गुज़र जाऐंगे हम तुम पे पड़ेगा सब भार
सुस्तियाँ तर्क करो तालिबे आराम न हो

ख़िदमते दीन को इक फ़ज़्ले इलाही जानो
इसके बदले में कभी तालिबे इन्आम न हो

दिल में हो सोज़ तो आँखों से रवां हों आँसू
तुम में इस्लाम का हो मग़्ज़ फ़क़त नाम न हो

सर में नख़्वत न हो आँखों में न हो बर्क़े ग़ज़ब
दिल में कींना न हो लब पे कभी दुश्नाम न हो

ख़ैर अन्देशिए अहबाब रहे मद्दे नज़र
ऐब चीनी न करो मुफ़्सिदो नम्माम् न हो

छोड़ दो हिर्स करो जुह्द व क़नाअत पैदा
ज़र न महबूब बने सीम दिल आराम न हो

रग़बते दिल से हो पाबन्द नमाज़ व रोज़ा
नज़र अन्दाज़ कोई हिस्सा-ए-अहकाम न हो

पास हो माल तो दो उससे ज़कात व सदक़ा
फिक्र मिस्क़ी रहे तुमको ग़मे अय्याम न हो

हुस्न उसका नहीं ख़ुलता तुम्हें यह याद रहे
दोश[1] मुस्लिम पे अगर चादरे एहराम न हो

आदते ज़िक्र भी डालो कि यह मुम्किन ही नहीं
दिल में हो इश्क़े सनम् लब पे मगर नाम न हो

अक़्ल को दीन पे हाकिम न बनाओ हरगिज़!
यह तो खुद अन्धी है गर नय्यरे इल्हाम न हो

जो सदाक़त भी हो तुम शौक़ से मानो उसको
इल्म के नाम से पुर ताबए औहाम् न हो

दुश्मनी हो न मुहिब्बाने मुहम्मद से तुम्हें
जो मुआनिद हैं तुम्हें उनसे कोई काम न हो

अमन के साथ रहो फित्नों में हिस्सा मत लो
बायसे फ़िक्रो परेशानिए हुक्काम न हो

अपनी इस उम्र को इक नेमते उज़्मा समझो
बाद में ताकि तुम्हें शिकवा-ए-अय्याम न हो

हुस्न हर रंग में अच्छा है मगर ख़याल रहे
दाना समझे हो जिसे तुम वह कहीं दाम न हो

तुम मुदब्बिर हो कि जरनैल हो या आलिम हो
हम न खुश होंगे कभी तुम में गर इस्लाम न हो

सेल्फ रिस्पेक्ट का भी खयाल रखो तुम बेशक
यह न हो पर कि किसी शख़्स का इक़राम न हो

उस्र हो युस्र हो तंगी हो कि आसाइश हो
कुछ भी हो बन्द मगर दावते इस्लाम न हो

तुमने दुनिया भी जो की फ़तह तो कुछ भी न किया
नफ़्स वहशी व जफ़ाकेश अगर राम न हो

(कलामे महमूद)

1. कंधा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 22 september 2016 Issue No. 29

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

कर न कर

(हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने एक पुस्तक "कर न कर" के शीर्षक से सरल शब्दों में उर्दू भाषा में लिखी थी। इस में आप ने अत्यधिक आसान शब्दों में इस्लामी शिक्षा को प्रस्तुत किया है। ताकि हम इसे अपने व्यवहार में लाऐं। इस का एक अंश पाठकों के लिए प्रस्तुत है। सम्पादक)

* तू सभ्य और शिष्ट मनुष्य बनने का प्रयत्न कर ।
* तू भेंट करते समय सलाम करने में पहल कर ।
* तू मित्रों से हाथ मिलाया कर ।
* तू अपने मकान और कमरे की वस्तुओं को क्रमश: और उचित स्थान पर रखा कर ।
* तू इतना शोर न मचा कि घर वालों और पड़ोसियों को बुरा लगे ।
* तू अपने जूते पृथ्वी पर घसीट या रगड़ कर न चला कर ।
* तू सीटी बजाने की आदत न डाल (और लड़कियों के लिए तो यह आदत बहुत बुरी है।
* तू अपना पाजामा और तहबन्द (लुंगी) नाभि से ऊपर बांधा कर।
* हे विद्यार्थी ! तू पेन्सिल या होल्डर को न चबाया कर।
* तू लकीर का फक़ीर न बन।
* हे विद्यार्थी ! तू स्लेट पर लिखा हुआ थूक से न मिटा।
* जब तू किसी धूल में भरे कपड़े को झाड़ने लगे तो लोगों से दूर ले जाकर झाड़।
* हे लड़के ! तू यथाशक्ति अन्य लोगों के साथ एक बिस्तर पर न सो ।
* तू साफ दरी पर मैले जूतों सहित न फिर ।
* तू हमेशा समय पर स्कूल, कालेज, आफ़िस या नौकरी पर जाया कर ।
* तू इस प्रकार न खा कि चपड़-चपड़ की आवाज़ लोगों को सुनाई दे ।
* तू अपने कपडों से नहीं अपितु रुमाल से नाक साफ किया कर ।
* हे स्त्री ! तू कंघी करने के पश्चात् अपने उतरे हुए बालों का गुच्छा इधर-उधर पर न फेंकती फिर ।
* तू बाज़ार में चलते-चलते कोई वस्तु न खा ।
* तू निर्धनों की मज्लिस का आनन्द भी लिया कर ।
* तू सभा में डकार मारने, जमुहाइयाँ लेने, ऊंघने और बदबूदार हवा निकालने से बच और यदि सभा में किसी से ऐसा हो जाए तो उस पर हंसी न कर ।
* जब तू किसी निमंत्रण में जाए तो निश्चित समय से देर करके न जा ।
* जब तू खाने से निवृत हो तो यथासंभव वहां देर न लगा ।
* हे लड़की ! तू अपने भाइयों के साथ एक बिस्तर में न सो ।
* तू यथासंभव पान खाने की आदत न डाल ।
* तू नाभि से नीचे और घुटने से ऊपर का शरीर लोगों के सामने नंगा न कर ।
* तू ऐसा वस्त्र न पहन जिससे तुझ पर उंगली उठाई जाए ।
* हे पुरुष ! तू अपना लिबास सादा और सूफ़ियों वाला रख ।
* तू जुमा (शुक्रवार) को छुट्टी मना ।
* तू अपने हाथ में छड़ी लेकर घर से बाहर निकला कर ।
* तू जिस वस्तु को जहां से उठाए फिर वहीं रख दिया कर ।
* तू सभा में हमेशा ऊँचे स्थान पर बैठने का प्रयत्न न कर ।
* हे स्त्री ! तू हद से बढ़कर श्रृंगार न कर ।
* हे स्त्री ! तू नामुहरम (अर्थात जिन लोगों से निकाह वैध है) पुरुष के साथ एकान्त में न बैठ ।
* हे स्त्री ! तू उन पुरुषों को जिन से निकाह वैध है अपने पति की आज्ञा के बिना घर में न आने दे ।
* तू अपनी नाक से हर समय सुड़-सुड़ न किया कर।
* तू रात को खुले लौ का दीपक और खुली आग को बुझा कर सो ।
* तू दूसरे की पुस्तक पर उसकी आज्ञा के बिना निशान न लगा, न उस पर नोट लिख ।
* तू पानी के बरतन को ढ़क कर रख ।
* तू दूसरों के सामने अपनी नाक में उंगली न दे ।
* जब तू किसी सभा में हो तो दांतो में तिनका न डाला कर।
* तूझे जमुहाई आए तो मुँह पर हाथ रख लिया कर।
* तू पीने के पानी में अपनी उंगलियां या हाथ न डुबो।
* तू सालन भरे हुए हाथ अपनी दाढ़ी से न पोंछा कर।
* तू लिखते समय कलम झटक कर आस-पास की वस्तुओं पर धब्बे न डाल।
* तू भोजन करके अपने हाथ इस प्रकार धो कि उंगलियों पर चिकनाई तथा हल्दी का निशान शेष न रहे।
* तू स्याही से अपने हाथों और कपड़ों को खराब न कर।
* हे पुरुष ! तू स्त्रियों की भांति बनाव, श्रृंगार में न लगा रह।
* तू मकान की दीवारों तथा फ़र्श को अपने थूक या पान की पीक से गन्दा न कर।
* तू अपने नाख़ून दांतो से न कुतरा कर।
* तू यथासंभव लिफ़ाफ़े को थूक से न चिपका अपितु पानी लगा।
* तू सभा में अपनी उंगलियां न चटका।
* तू किसी सभा में हो तो न लेट।
* तू आंखे मार कर या मटका कर बातें करने की आदत न डाल।
* तू अपना कपड़ा या पुस्तक मुँह से न चूसा कर और न कुतरा कर।
* तू जवान विधवा स्त्री के विवाह के लिए कोशिश करता रह।
* हे स्त्री ! तू ग़ैर मर्द के सम्मुख अपने सौंदर्य एवं श्रृंगार को प्रदर्शित न कर।
* तू आस्तीन से अपनी नाक न पोंछ।
* जब तू बाज़ार में से गुज़रे तो मार्ग पर चलने वालों को सलाम कर, किसी के मार्ग में बाधा न डाल और सड़क के एक ओर होकर चल।
* तू ऐसी अंजुमनों, सोसायटियों या कमेटियों का सदस्य बन जिनका कार्य निर्धनों की सहायता, नेकी का प्रचार तथा प्रजा को लाभ पहुंचाना हो।
* तू किसी ख़तरनाक हथियार (शस्त्र) का मुख किसी मनुष्य की ओर न कर।
* तू मस्जिदों में तथा पब्लिक जल्सों में अपने अच्छे कपड़े पहन कर उपस्थित हुआ कर।
* तू अपने बच्चों को बुरी बातों से रोक, अच्छी बातों की प्रेरणा दे और उनको कष्ट सहन करना सिखा।
* तू यथासामर्थ्य हमेशा सभ्य ढ़ग से शास्त्रार्थ (मुबाहसा) कर और व्यक्तिगत बातों पर हमला न कर।
* तू स्वयं ही बात करके स्वयं ही न हंसा कर।
* तू किसी जल्से में लोगों पर से फलांगता हुआ प्रवेश न हो।
* जो मनुष्य समृद्धि रखते हुए भी विवाह न करे वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म की उम्मत में से नहीं ।
* जो व्यक्ति बच्चों के डर से शादी न करे वह भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में से नहीं ।
* यदि तुझे सामर्थ्य हो तो अपने पास एक घड़ी अवश्य रख।
* तू बाज़ार में नंगे सिर और नंगे पैर न फिर।
* जब दो व्यक्ति बातें कर रहें हों तो तू उनमें अकारण दखल न दे।
* तू अपने खाने – पीने की चीज़ों को मिट्टी और धूल से बचा।
* तू अपने घर की छतों और दीवारों को मकड़ी के जालों से साफ रख।
* तू अपनी बातचीत में मूर्खतापूर्ण शब्दों का प्रयोग न किया कर।
* तू समाज में किसी गुप्त सोसायटी का सदस्य न बन।
* तू केवल एक पैर में जूता पहन कर न च ।
* तू अपनी रद्दी और कूडा-कर्कट हर स्थान पर बिखेरने की बजाए एक टोकरी में डाला कर।
* तू कष्ट देने वाले जानवरों (दतैया, सांप, बिच्छू इत्यादि) को कष्ट पहुंचाने से पूर्व ही मार दे क्योंकि यह पाप नहीं बल्कि पुण्य है तथा मनुष्यों पर दया कर।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad